।। अथ श्रीमहापूजा विधिः।।

॥ अथ श्रीमहापूजाविधिः ॥

[**सूचना**—आपका मुख या तो पूर्व दिशा या तो उत्तर दिशा की ओर रहे, यूं पवित्र आसन पर बैठिये। बाद में अपने सामने भगवान श्री स्वामिनारायण और भगवत्स्वरूप संतों की मूर्तियों का स्थापन कीजिए। अपनी बांयी ओर कलश तथा दांयी ओर पूजन की सामग्री रखिए। घी का दीया जलाएं पश्चात् निम्नलिखित भजन की पंक्तियां बोलकर 'महापूजा' की शुरुआत कीजीए।]

'स्वामिनारायण भज हर घड़ी, } 2
फिर मिलेगी ना ये शुभ घड़ी
ओ......छोड़ दे मोह माया के बंधन–2
नाम जप की पिरो ले लड़ी,
स्वामिनारायण भज हर घड़ी........॥
भज ले स्वामी नाम, स्वामी नाम भज ले
ओ.....भज ले स्वामी नाम, स्वामी नाम भज ले......
स्वामिनारायण को जो भजे, काल माया करम से बचे–2
स्वामी नाम बिना कुछ नहीं, संतों ने कहा है यही
ओ.....कहा है यही,
स्वामी नाम बिना कुछ नहीं, स्वामिनारायण भज.......॥

या

'प्रभु हैं प्रगट तो सीखें हम, करामात प्रत्यक्ष करने की–2
लय और लीन होकर उसमें ही,
क्रियायें करें सभी जीवन की]–2
योग और क्षेम वो वहन करेंगे, मूर्ति स्वरूप हो जायेंगे
सहजानंद मिल जायेगा, सपने में जो नहीं सोचा था
तप ध्यान योग से प्रभु मिलेंगे ऐसा मैंने सोचा था
मौज में प्रभु रंगीले मिलेंगे, सपने में नहीं सोचा था'

या

'निजात्मानं ब्रह्मरूपम्, निजात्मानं ब्रह्मरूपम्
ब्रह्मरूप हो परब्रह्म धर ले–2
एकांतिक का ये धरम, निजात्मानं ब्रह्मरुपम्–2.....
सर्वोपरि स्वामिनारायण, अक्षरब्रह्म को संग ले आए;
अखंड धरा पर प्रगट रहूँगा–2, भारत पर आशिष बरसाए,
श्याम, घनश्याम, धन्यवाद, धन्यवाद..........'

[**सूचना**—पश्चात् निम्नलिखित मंगलाचरण के श्लोक बोलिए।]

॥ अथ मंगलाचरणम् ॥

प्रकटे कौशल देश वेश बटु धर, तीर्थों में घूमे अनंत,
रामानंद मिले स्वधर्म स्थापा, यज्ञादि कीन्हे महंत।
भव्य धाम रचे, रहे गढ़पुरे, दो देश गद्दी करी,
अंतर्धान हुए नहीं प्रगट हैं, 'गुणातीत' से '**हरि**'।। 1।।

जो उत्पत्ति एवं स्थिति लय करे, वेदों स्तुति उच्चरे,
जाके रोमसुच्छिद्र में अणुसम, ब्रह्मांड कोटि फिरें।
माया काल रवि शशि सुरगण, आज्ञा न लोपे क्षण,
ऐसे अक्षरधाम के अधिपति, '**श्री स्वामिनारायण**'।। 2।।

जो हैं अक्षरधाम दिव्य हरि का, जामे बसे मुक्त हैं,
माया पार करें अनंत जीव को, जो मोक्ष का द्वार हैं।
ब्रह्मांड अणुतुल्य रोम दिसते, सेवे 'परब्रह्म' को,
ऐसे अक्षरब्रह्म को नित नमूं, '**गुणातीतानंद**' जो।। 3।।

साधा अष्टांगयोग, प्रगट हरि की, प्रीति हेतु प्रयत्ने,
शोधे वेदांततत्त्व, सकल ग्रह लिए, सिंधु से जैसे रत्न।
आधि-व्याधि-उपाधि, प्रणत जन की, टाल ले ली समाधि,
'**गोपालानंदस्वामी**', सकल गुण निधि, वंदु माया अबाधि।। 4।।

श्रीमन्निर्गुणमूर्ति सुंदर वपु, ज्ञानोपदेशे भरे,
आश्रय हैं सकल साधु गुण के, सर्वज्ञ माया परे।
समर्थ सुपूर्ण भक्त निज के, हैं दोषहंता प्रभु,
ऐसे '**प्रागजी' ब्रह्मरूप** गुरु को वंदन करूँ, हे विभू।। 5।।

इति गुणनिधिवंता, '**भक्त जागा**' धिमंता,
भूमि पर एहि संता, पंच दोषादिहंता।
श्रितहित अनुसरता, मूल अज्ञान हरता,
धन सम सुख करता, जनोपदेशे विचरता।। 6।।

श्री राजकोट नगरे विमले बसे जो,
श्रीजी स्वरूप महिमा हृदये धरे जो।
देते प्रकाश मूल अक्षर का प्रतापी,
त्वां **'कृष्णजी'** गुरुवरं शरणं प्रपद्ये।। 7।।

जाके नाम रटन से, मलिन वे संकल्प निर्मूल हुए,
जाके आश्रय से समूल सबके, संसार-फेरे टले।
जाकी कीर्ति दिग्-दिगंत बिखरी, गाएं सभी चाव से,
ऐसे **'यज्ञपुरुषदास'** चरणे, वंदूं सदा भाव से।। 8।।

वाणी अमृत ज्यों भरी शहद-सी, संजीवनी सृष्टि की,
दृष्टि में भरी दिव्यता निरखते, सुदिव्य भक्तों सभी।
दिल में प्रेम भरा मीठा जननी-सा, शोभे सदा हास से,
ऐसे **'ज्ञानजी योगीराज'** गुरु को, वंदूं सदा भाव से।। 9।।

जाकी अमृतवाणी तो बही सदा, साक्षात् महिमा रूपे,
ब्राह्मीस्थिति ने अहो! लीन किए, सुभव्य अक्षर पदे।
शरणागत निज अल्प जीव सब के, श्रेयार्थ तत्पर रहे,
'काका' स्नेहलसिंधु दिव्य विभु को, हृदय तो वंदन करे।। 10।।

जाकी वाणी में सदा ही बही, सुरावली ब्रह्म की,
किन्तु हो अज्ञात अल्प समीपे, रसबस सभी में रहें।
जिएं जो अलमस्त स्वामिश्रीजी में, हैं मोक्षदाता अपि,
'पप्पा' योगीस्वरूप विभु चरणे, झुके रहें भाव से।। 11।।

सोहे सद्‌गुणपूर्ण जो सरल व, जक्त से अनासक्त हैं,
शास्त्रीजी गुरु योगीजी उभय की, कृपा के जो पात्र हैं।
धारी धर्मधुरा समुद्र–सम है, गंभीर जो ज्ञान से,
‘नारायणस्वरूपदास’ गुणी को, वंदूं अहो! भाव से।।12।।

सोहे सौम्य मुखारविंद हंसता, नेत्रे अमी बरसते,
वाणी तो महिमाभरी मृदु अरु, हिया हरि धारते।
योगीराज प्रमुखजी हृदय से, जाके गुणे रीझते,
वंदू संत **महंतस्वामी** गुरु जो, कल्याणदाता मिले।।13।।

दीक्षा अर्पी अहो गुणातीत–सी, जाको गुरु ‘योगी’ ने,
काकाजी और आप दिव्य द्वय का, अद्वैत अनूठा ही है।
भेदे साक्षी अनंत के, स्वरूप ये शास्त्री महाराज का,
ऐसे **‘स्वामी हरिप्रसाद’** चरणे, वंदन सदा हम करें।।14।।

निष्ठा तो परिपूर्ण अद्‌भुत अहो! जाकी ‘प्रगट’ में दिसे,
मूर्ति सिद्धदशा अनादि की खरी, व धैर्य साक्षात् बसे।
प्रासादे निज धाम चैतन्य में, स्वामी बिराजी गए,
‘स्वामी अक्षर के विहारी’ चरणे, वंदें सभी भाव से।।15।।

जो साक्षात् महिमाभरा स्वरूप व, आनंद की मूरत हैं,
तेजस्वी शूरवीर वत्सल अति, स्वामिश्रीजी धाम हैं।
स्वाश्रयी कर्मयोगे अनुपम, स्थापी परम साधना,
भागी अहो! योगी के, संतभगवंत **‘साहेब’** को वंदना।।16।।

जो ध्यान धरे श्रीजी का हर पल, चर्चा ब्रह्म भाव की,
मूर्ति में रह कर जो गाएं महिमा, श्रीजी के स्वरूप की।
दृष्टि जिनकी काकाजी सम, अनुग्रह अनूठा करे,
'दिनकर' दिव्य स्वरूप के, चरणों में सर्वदा हम रहें।।17।।

ब्रह्मरूप से श्री हरि के, चरण–अनुरागी बनें।
आशीष–आश्रय दें हमें, यह याचना करबद्ध करें।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं, केवलं भक्तिमूर्तिम्,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं, तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधी साक्षीभूतं,
भावातीतं त्रिगुणनिहितं, सद्गुरुं तं नमामि॥

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्॥
वसुदेवसुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः–शान्तिः–शान्तिः

[**सूचना—**निम्न प्रकार महाराज और अक्षरमुक्तों का स्मरण करके आचमन कीजिए।]

1. ॐ श्री सहजानन्दस्वामी महाराजाय नमोनमः।
2. ॐ श्री गुणातीतानन्दस्वामिने नमोनमः।
3. ॐ श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय नमोनमः।
4. ॐ श्री गोपालानन्दस्वामिने नमोनमः।
5. ॐ श्री भगतजी-महाराजाय नमोनमः।
6. ॐ श्री जागास्वामि-महाराजाय नमोनमः।
7. ॐ श्री गुरुकृष्णजी-अदाने नमोनमः।
8. ॐ श्री शास्त्रीजी-महाराजाय नमोनमः।
9. ॐ श्री योगीजी-महाराजाय नमोनमः।
10. ॐ श्री काकाजी-महाराजाय नमोनमः।
11. ॐ श्री पप्पाजी-महाराजाय नमोनमः।
12. ॐ श्री प्रमुखस्वामि-महाराजाय नमोनमः।
13. ॐ श्री हरिप्रसादस्वामि-महाराजाय नमोनमः।
14. ॐ श्री अक्षरविहारीस्वामि-महाराजाय नमोनमः।
15. ॐ श्री महंतस्वामि-महाराजाय नमोनमः।
16. ॐ श्री साहेबजी ने नमोनमः।
17. ॐ श्री हरिभाईने नमोनमः।
18. ॐ श्री दिनकरभाईने नमोनमः।
19. ॐ श्री भरतभाईने नमोनमः।
20. ॐ श्री वशीभाईने नमोनमः।

[**सूचनाः**—इस प्रकार आचमन करने के बाद हाथ धो डालो।]

॥ अथ प्राणायामः ॥

[**सूचना**—सभी स्थिर चित्त से प्राणायाम कीजिए]

॥ अथ संकल्पः ॥

[**सूचनाः**—इसके बाद हाथ में जल लेकर निम्नलिखित संकल्प बोलिए।]

ॐ नमः परमात्मने, श्रीस्वामिनारायणपूर्ण-पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत्। अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे, श्री श्वेतवाराहकल्पे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्ते, पुण्यभूमौ, एनसीआरप्रदेशान्तर्गते, दिल्लीनगर्यां श्रीअक्षरपुरुषोत्तममंदिरे मासोत्तमेमासे.......... मासे........... दिनांके........... वासरे.......... निश्रा में

सर्वेषां भक्तानां नामानि दीयन्ते। [नाम बोलने]

एतेषां धर्मार्थ, काम, मोक्षफल प्राप्त्यर्थं भगवत्स्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिनश्च सर्वेषां स्वरूपाणां कृपया, श्री स्वामिनारायण प्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोपचार-द्रव्यैः, ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः, अन्योपचारैः श्री साक्षरमुक्तैः सह श्री हरेः महापूजामहं करिष्ये।

[**सूचना**—इस प्रकार संकल्प बोल कर जल छोड़ दो और फिर से जल लेकर बोलिये।]

तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशार्चनं, शंखघण्टार्चनं अहं करिष्ये।

[**सूचना—**इस प्रकार बोल कर जल छोड़ दीजिए। इसके बाद बायें हाथ में चावल लिजिए और उसके ऊपर दायां हाथ रख कर निम्नलिखित दो श्लोक बोलिये।]

॥ अथ दिग्रक्षणम् ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु हरेराज्ञया॥ 1 ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषाअमविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥ 2 ॥

[**सूचना—**ये दोनों श्लोक बोल कर चावल को चारों दिशा में बिखेर दो।]

॥ अथ आवाहनं स्थापनं च ॥

[**सूचना—**प्रथम निम्नलिखित श्लोक बोलिये। बाद में जो-जो स्थान दिखाये गये हैं, वहां चोकी पर नामानुसार आवाहन और स्थापन कीजिए।]

आवाहयामि हे स्वामिन्! त्वां तु मुक्तगणैः सह।
महापूजां करिष्येहं भक्तानां श्रेयहेतवे॥

स्थान	देवता	आवाहन और स्थापना
मध्ये	श्री पूर्णपुरुषोत्तम	आवाहयामि
	सहजानंदस्वामी महाराजं	स्थापयामि
	श्री स्वामिनारायणं	
दक्षिणबाहौ	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी महाराजं	,,
वामबाहौ	अ.म.मु. गोपाळानंदस्वामी महाराजं	,,
दक्षिणे	श्री भगतजी महाराजं	,,
	श्री जागा स्वामिनं च	
नैर्ऋत्ये	श्री कृष्णजी महाराजं	,,
	श्री शास्त्रीजी महाराजं च	
पश्चिमे	श्री योगीजी महाराजं	,,
	श्री महन्तस्वामिनं च	
वायव्ये	भगवत्स्वरूपौ प.पू. काकाजी	,,
	प.पू. पप्पाजी उभौ	
उत्तरे	प.पू. हरिप्रसादस्वामिनं	,,
	प.पू. अक्षरविहारीस्वामिनं च	
ईशाने	प.पू. जशभाई साहेबं	,,
	प.पू. हरिभाई साहेबं च	

स्थान	देवता	आवाहन और स्थापना
पूर्वे	प.पू. गुरुजी	आवाहयामि
	प.पू. दिनकरभाई च	स्थापयामि
अग्नौ	पू. भरतभाई	,,
	पू. वशीभाई संज्ञौ	
दक्षिणे	पू. कोठारी पुरुषोत्तमस्वामिनं	,,
	पू. प्रेमस्वामिनं च	
नैर्ऋत्ये	पू. कोठारी उपेन्द्रस्वामिनं	,,
	पू. शास्त्रीस्वामिनं च	
पश्चिमे	पू. निर्मळस्वामिनं	,,
	पू. भाईस्वामिनं च	
वायव्ये	पू. विज्ञानस्वामिनं	,,
	पू. निष्कामजीवनस्वामिनं च	
उत्तरे	पू. कांतिकाका	
	पू. गोरधन काका संज्ञौ	
ईशाने	पू. महेन्द्र बापू	,,
	पू. रमेशभाई सोनी संज्ञौ	
पूर्वे	पू. राजुभाई	,,
	पू. हरखचंद भाई संज्ञौ	

स्थान	देवता	आवाहन और स्थापना
अग्नौ	पू. अश्विनभाई	आवाहयामि
	पू. शांतिभाई संज्ञौ	स्थापयामि
पूर्वाग्नि	पू. घनश्यामभाई अमीन	,,
मध्ये	पू. आणंद बापा संज्ञौ	
अग्निदक्षिण	पू. विजय बाबू	,,
मध्ये	पू. जनार्दनभाई संज्ञौ	
दक्षिणनैर्ऋत्य	पू. चंदुभाई दाजी	,,
मध्ये	पू. कैलाशचंद शर्मा संज्ञौ	
नैर्ऋत्यपश्चिम	पू. पकाई साहेब	,,
मध्ये	पू. जानी साहेब संज्ञौ	
पश्चिमवायव्य	पू. दालिया साहेब	,,
मध्ये	पू. अनुभाई संज्ञौ	
वायव्योत्तर	पू. उदयभाई	,,
मध्ये	पू. शैलेष भाई संज्ञौ	
उत्तरईशान	पू. नवीन भाई	,,
मध्ये	पू. वच्छराज भाई संज्ञौ	
ईशानपूर्व	पू. अनिलजी	,,
मध्ये	पू. पुरी साहेब संज्ञौ	

स्थान	देवता	आवाहन और स्थापना
पूर्वाग्नि	पू. अग्रवालजी	आवाहयामि
मध्ये	पू. पुनीतजी संज्ञौ	स्थापयामि
अग्निदक्षिण	पू. राकेशभाई	,,
मध्ये	पू. कौशिकभाई संज्ञौ	
दक्षिणनैर्ऋत्य	पू. विनोद भाई	,,
मध्ये	पू. प्रकाशभाई संज्ञौ	
नैर्ऋत्यपश्चिम	पू. रमेश मास्टरजी	,,
मध्ये	पू. महेन्द्र जयसवाल संज्ञौ	
पश्चिमवायव्य	पू. प्यारेलाल जी	,,
मध्ये	पू. गुरुबक्शसिंह संज्ञौ	
वायव्योत्तरमध्ये	पू. मल्कानी साहेब संज्ञं	,,
उत्तरईशानमध्ये	पू. सुरेश सवद्दी संज्ञं	,,
अग्निदक्षिणमध्ये	पू. प्रभाकर भाई संज्ञं	,,
ईशाने	श्री पर्वतभाई संज्ञं	,,
अग्नौ	श्री गोरधनभाई संज्ञं	,,
नैर्ऋत्ये	श्री देवजी भक्त संज्ञं	,,
वायव्ये	श्री पूंजा भक्त संज्ञं	,,

[**सूचना**—इस प्रकार आवाहन और स्थापन करने के बाद जैसा आगे किया था, इस प्रकार आचमन और प्राणायाम कीजिए। बाद में हाथ में जल लेकर निम्नलिखित संकल्प बोलिये।]

॥ अथ संकल्पः ॥

ॐ अद्यात्र मासोत्तम मासे...................... मासे..................... दिनांके................. वासरे सर्वेषां भक्तानां धर्मार्थकाम मोक्षार्थं भगवत्स्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिनश्च सर्वेषां स्वरूपाणां प्रसन्नतार्थं श्रीस्वामिनारायण-परमात्मनः षोडशोपचार पूजनमहं करिष्ये।

॥ अथ कलशपूजनम् ॥

[**सूचना**—षोडशोपचार पूजन करने के पूर्व कलश आदि का पूजन करना है। अतः प्रथम बाईं ओर चावल से बनाये हुए अष्टदल यंत्र पर तांबे के कलश का स्थापन कीजिए। इसके बाद कलश में रौली, जौ, पंचरत्न, पाँच प्रकार के पत्ते रखिए और कलश के कंठ को मौलि से बांध दीजिए। इसके बाद कलश के ऊपर श्रीफल अर्थात् नारियल रखिए। इसके बाद दायें हाथ से कलश को छू करके निम्नलिखित दो श्लोक बोलिये।]

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ 1॥

त्वत्-तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वाणि यतः कामफल प्रदा॥ 2॥

[**सूचना**—इसके बाद अंकुश मुद्रा दिखाइए और इसके द्वारा कलश में सर्व तीर्थों का आवाह्न निम्नलिखित दो श्लोक द्वारा कीजिए।]

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिंकुरु॥ 1॥
उन्मत्तगंगा, सरयू च घेल, श्री गोंडली, उंड, सरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि हरिकृतानि एहि जलेऽस्मिन्सन्निधिंकुरुत॥ 2॥

॥ अथ मार्जनम्॥

[**सूचना**—आचमनी में जल लेकर सब दिशाओं में छींटे डालिये और अपने मस्तक पर भी डालिये। इस क्रिया को मार्जन कहते हैं। उस समय निम्नलिखित श्लोक बोलिये।]

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत् योगिराजं हि स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥ 1॥

॥ अथ दीपपूजनम्॥

[**सूचना**—अब निम्नलिखित श्लोक बोलिये और दीप का पूजन कीजिए।]

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
संसारतमसः पाहि नमस्ते ज्योतिरूपिणे॥ 1॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः। दीपं दर्शयामि।
दीपस्थ देवतायै नमः, आवाहयामि, सर्वोपचारार्थं
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

॥ अथ शंखपूजनम्॥

[**सूचना**—शंख में जल भर के पहले निम्नलिखित दो श्लोक बोलिये, बाद में शंख का पूजन कीजिए।]

शंखे चन्द्रार्क दैवत्वम् वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्याद् अग्रे गंगा सरस्वती॥ 1॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच् शंखं प्रपूजयेत्॥ 2॥

ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः। शंखस्थदेवतायै नमः। आवाहयामि, सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि, प्रार्थयामि।
ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे, पावनाय धीमहि।
तन्नः शंखः प्रचोदयात्।

॥ अथ घण्टापूजनम्॥

[**सूचना**—प्रथम निम्नलिखित श्लोक बोलिये, बाद में घण्टी का पूजन कीजिये।]

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत्॥ 1॥

ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः। घण्टस्थ-गरुडाय नमः। आवाहयामि, सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

॥ अथ षोडशोपचारपूजनविधिः॥

[**सूचना**—अब धाम, धामी और मुक्तों का षोडश (सोलह) प्रकार से पूजन करना है। वह निम्नानुसार करना है।]

ध्यानम्—दो मिनिट भगवान का ध्यान कीजिए।

बाद में घंटानाद से भगवान का आवाह्न कीजिए और उनको जगाइए। घंटा बजाते-बजाते निम्नलिखित भजन की पंक्तियाँ बोलिये।

'हर पल तुम्हारी मूर्ति का चिंतन किया करूँ
तेरा हर एक प्रसंग याद कर जिया करूँ
मैं - मैं ना रहूँ बस प्रभु एक तू ही तू रहे
मिट जाए प्यास तेरा वचनामृत पिया करूँ
प्रभु मिल गए हो आप, कृपा से ये करा दो
तुम ब्रह्मस्वरूप हो मुझे भी ब्रह्म बना दो
गुरुदेव मेरे मन में ज्ञान ज्योति जगा दो
तुम ब्रह्मस्वरूप...............'

या

'महिमा माहात्म्य जैसा है, **वैसा ही जान लूँ–2**
मूर्ति हो अक्षरधाम की, **दृढ़ता से मान लूँ–2**
तुझ में तेरी क्रियाओं में अभाव ना आए
काका स्वरूप प्रगट हो तुमको पहचान लूँ
गफलत में न रहूँ मुझे वो सूझ बता दो
तुम ब्रह्मस्वरूप हो मुझे भी ब्रह्म बना दो
गुरुदेव मेरे मन में ज्ञान ज्योति जगा दो
तुम ब्रह्मस्वरूप..............................'

[**सूचना**—तत्पश्चात् निम्नलिखित श्लोक बोलिए।]

उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ हे नाथ स्वामिनारायण प्रभो।
धर्मसूनो दयासिन्धो समेषां श्रेयः परं कुरु॥

आवाहनम्

आगच्छ भगवन्स्वामि मुक्त कोटीभिः सह।
अहं पूजां करिष्यामि सदा त्वं सन्मुखो भव॥1॥

[**सूचना—**फिर बोलना]

ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः, आवाहयामि।

आसनम्

[एक पात्र में तीन तुलसी के पत्ते, चावल रखिए और भावना कीजिए कि मैं धाम, धामी और मुक्तों को आसन समर्पित कर रहा हूँ और उस समय यह श्लोक बोलिये।]

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व-सौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

[**सूचना—**फिर बोलिए]

ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।
आसनार्थं तुलसीदलानि समर्पयामि।

पाद्यम्

[**सूचना—**चन्दन युक्त जल से ठाकुरजी के चरण धोएं।]

उष्णोदकं निर्मलं च सर्व-सौगन्ध्य-संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय पाद्यं च प्रति गृह्यताम्॥ 1॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

[**सूचना—**आचमनी में जल लेकर इसमें गंध, अक्षत और पुष्प डालो। बाद में निम्नलिखित श्लोक बोलते-बोलते भगवान को अर्घ्य समर्पित कीजिए।]

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्ध-पुष्पाऽक्षतैः सह।
ताम्रपात्रं स्थितं चैव फलतोय-समन्वितम्॥ 1॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

[**सूचना**—अब पुनः आचमनी में जल लिजिए और निम्नलिखित दो श्लोक बोल कर भगवान को समर्पित कर दीजिए।]

सर्वतीर्थ-समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

योगिराज-नमस्तुभ्यं श्री हरेः स्वरूपं स्वयम्।
मयादत्तमिदं तोयं गृहीत्वाचमनं कुरु॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।
आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्

[**सूचना**—निम्नलिखित श्लोक बोल कर 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करते हुए भगवान को नहलाईए।]

उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्धि निर्मितम्।
स्नानार्थं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।
स्नानं समर्पयामि।

पंचामृतस्नानम्

[**सूचना**—ठाकुरजी को पंचामृत से स्नान कराएं।]

पयोदधि घृतं चैव मधुनि शर्करास्तथा।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम्॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।

पंचामृत-स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान्ते शुद्धोदक स्नानं ।

[**सूचना—**ठाकुरजी को शुद्ध जल से स्नान कराएं।]

नदीनामेव सरसां मयानीतं जलं शुभम्।
गृहाण स्नानमन्त्रेण प्रभो स्नानीयमुत्तमम्॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

[**सूचना—**मंत्र जाप कीजिए।]

वस्त्रम्

[**सूचना—**निम्नलिखित श्लोक बोल कर भगवान को वस्त्र प्रदान कीजिए।]

वस्त्रयुग्मं गृहाण त्वं सूक्ष्म-सूत्रविनिर्मितम्।
सूक्ष्म-कार्पास-तन्तुभिः सुवर्णेन विराजितम्॥ 1॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।
वस्त्रयुग्मं समर्पयामि।

[**सूचना—**तत्पश्चात् निम्नलिखित भजन की पंक्तियां बोलिये।]

'दृष्टि से ही वासनाएं टाल दी,
बैठ गए भेद कर चैतन्य में
पात्रता देखी नहीं न दोष-गुण,
कर दिया कल्याण एक संबंध से
ऐसे प्रभु मिल गए क्या और चाहिए।

प्रगट प्रभु की प्राप्ति का आनंद मनाइए
सुख अक्षरधाम का यहीं पे पाइए,
प्रगट प्रभु की प्राप्ति का आनंद मनाइए........'

या

'तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा....2
जैसे करुणा का रूप, जैसे स्नेहल स्वरूप
जैसे शक्ति का पुंज, जैसे प्रार्थना की गूँज
जैसे भक्तों का श्वास, जैसे निराशों की आस
जैसे कड़कती धूप में ममता की छाँव.......ओ...........
तेरी मूर्ति को देखा.............'

यज्ञोपवीतम्

[**सूचना—** इसके बाद निम्नलिखिति श्लोक बोल कर भगवान को यज्ञोपवीत् पहनाईए।]

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनम्

चंदनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यगरु सयुंतम्।
कर्पूरेण च सम्मिश्रं स्वीकुरु च विलेपनम्॥

ॐ श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडल सहिताय चन्दनं समर्पयामि।

[**सूचना—** धाम, धामी और मुक्तों को चंदन के टीके कीजिए और बाद में रौली और **अक्षत से सभी सोपारीयों की पूजा कीजिए।** पूजा करते-करते निम्नलिखित अष्टक बोलिए।]

श्री वासुदेव - विमलामृतधामवासम्
नारायणं नरकतारण नामधेयम्॥
श्यामं सितं द्विभुजमेव चतुर्भुजं च।
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 1॥

शिक्षार्थमत्र निजभक्तिमतां नराणाम्।
एकान्त-धर्ममखिलं परिशीलयन्तम्॥
अष्टांगयोग-कलनाश्च महा-व्रतानि।
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 2॥

श्वासेन साकमनुलोम-विलोम-वृत्त्या।
स्वान्त र्बहिश्च भगवत्पुरुधा निजस्य॥
पूरे गताऽऽगत-जलाऽम्बुधिनोपमेयं।
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 3॥

बाह्यान्तरिन्द्रिय - गण -श्वसनाधि - दैव।
वृत्युद्भव - स्थितिलयानपि जायमानान्॥
स्थित्वा ततः स्व-महसा पृथगीक्षमाणं।
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 4॥

मायामयाकृति-तमोऽशुभ वासनानां।
कर्तुं निषेधमुरुधा भगवत्-स्वरूपे॥
निर्बीज साङ्ख्यमतयोग-सुयुक्तिभाजं।
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 5॥

दिव्याकृतित्व - सुमहस्त्व - सुवासनानां।
सम्यग्विधिं प्रथयितुं च पतौ रमायाः॥
सालम्ब सांङ्ख्यपथ-योगसुयुक्तिभाजं।
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 6॥

कामार्त - तस्कर-नट- व्यसनि - द्विषन्तः।
स्वस्वार्थ-सिद्धिमिव चेतसि नित्यमेव॥
नारायणं परमयैव मुदा स्मरन्तं।
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 7॥

साध्वीचकोर - शलभास्तिमिकालकण्ठ
कोका निजेष्टविषयेषु यथैव लग्नाः।
मूर्तौ तथा भगवतोऽत्र मुदातिलग्नं
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 8॥

स्नेहातुरस्त्वथ भयातुर आमयावी
यद्वत् क्षुधातुरजनश्च विहाय मानम्।
दैन्यं भजेयुरिह सत्सु तथा चरन्तं
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 9॥

धर्म स्थितैरूपगतै र्बृंहता निजैक्यं
सेव्यो हरिः सितमहः स्थित-दिव्यमूर्तिः।
शब्दाद्य-रागिभिरिति स्वमतं वदन्तं
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 10॥

सद्ग्रन्थ-नित्यपठन - श्रवणादि - सक्तं
ब्राह्मीं च सत्सदसि शासतमत्र विद्याम्।
संसार - जाल-पतिताखिल - जीवबन्धो
त्वां भक्ति-धर्म-तनयं शरणं प्रपद्ये॥ 11॥

पुष्पम्

[**सूचना—**अब निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए भगवान को पुष्प निवेदित कीजिए।]

शतपत्रैः कर्णिकारैश्चंपकैर्मल्लिकादिभिः।
पुष्पैर्नाना विधैश्चैव पूजयामि सुरेश्वरम्॥
ॐ श्री स्वामिनारायण-परमात्मने नमः।
पुष्पं समर्पयामि।

[**सूचना—**तत्पश्चात् निम्नलिखित भजन की पंक्तियाँ बोलिए।]

पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है,
हैरान है ज़माना, मंजिल भी मिल रही है,
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है,
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है,
करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है.....
मेरा आपकी कृपा से..........

या

हो आज मेरी आतम खुशियों में गावत भगवन–2
आयो रे द्वार, चारों प्रकार, अति बरसायो आनंद
बोलो जय सहजानंदम्, करो अब ब्रह्मानंदम्–2
हो आज मेरी–2
आज आनंद भयो, निहारी रसिया–3
दिव्य हुए है नैन
दर्शन से पावन परब्रह्म, हो दिव्य हुए हैं नैन
दिव्य हुए है नैन, दर्शन से पावन परब्रह्म
आयो रे द्वार....................
बोलो जय सहजानंदम्..................–2 हो आज मेरी–2

नैवेद्यम्

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
भक्ष्य भोज्य समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीअक्षरपुरुषोत्तमाय-भक्तमंडल सहिताय
नैवेद्यं समर्पयामि।

[**सूचना—** भोजन का थाल जहाँ रखना हो, उस स्थान पर प्रथम पुष्प रखिए। इसके बाद उस पर थाल रखिए। इसमें तुलसी पत्र रखिए और निम्नलिखित थाल बोलते हुए भगवान को प्रेम से भोजन करने के लिए प्रार्थना करें।]

मारे घेर आवीया छोगलाधारी
मारे घेर आवीया धामना धामी
लाडु जलेबी ने सेव सुवांळी,
हुं तो भावे करी लावी छुं भारी.......मारे (1)

सुरण पुरण ने भाजी कारेला,
पापड़ वड़ी वघारी,
वंताक वालोळना शाक कर्या
में तो चोळाफळी छमकारी...... मारे (2)

काजु कामोदना भात कर्या में तो,
दाळ करी छे बहु सारी,
लींबु काकड़ीना लेजो अथाणां,
कढ़ी करी छे काठियावाडी..... मारे (3)

वघारेला भातमां नाख्या वटाणा,
सूकी करी बटेटानी भाजी,
पोचा-पोचा थेपला प्रेमथी बनाव्या,
ताजी करी तांदळजानी भाजी...... मारे (4)

मेंथीनी भाजीना मुठिया बनाव्या,
में तो दीधा वालोळमां वघारी,
नानी-नानी रोटलीना फुलका बनाव्या
प्रेमे जमवा पधारो मारा स्वामी..... मारे (5)

[**सूचना—** इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद भगवान को भोजन करने का समय दीजिए। इस दौरान ध्यान कीजिए। बाद में भगवान को जल धरा कर निम्नलिखित प्रार्थना बोल कर थाल आगे बोलिए।]

हे महाराज जमो ! स्वामी जमो ! गढपुर के गोपीनाथ महाराज जमो ! लक्ष्मीनारायण देव जमो !
नरनारायण देव जमो !
राजा रणछोड़ त्रिकमदेवजी जमो !
श्री मदनमोहनदेवजी जमो !
वड़ताल के हरिकृष्ण महाराज जमो !
गोंडल के घनश्याम महाराज जमो !
सारंगपुर के हरिकृष्ण महाराज जमो !
दिल्ली के प्रसन्नवदन करुणानिधान महाराज जमो !
गुणातीत समाज के प्रत्यक्ष धाम धामी मुक्तो जमो !

जळ रे घेलानी में तो झारी रे भरावी
तमे आचमन करोने मारा स्वामी,
हळवे हळवे जळ पीओ रे,
प्रभु अवतारना अवतारी..... मारे (6)
लविंग सोपारी ने पान बीड़ी वाळी
तज एलची जावंत्री सारी,
निशदिन आवो तो भावे करी भेटुं
एम मागे जेराम ब्रह्मचारी...... मारे (7)

ताम्बूलम्

[**सूचना**—निम्नलिखित श्लोक बोल कर मुख शुद्धि के लिए भगवान को मुखवास समर्पित कीजिए।]

नागवल्ली-दलै-र्युक्तं पुगीफल-समन्वितम्।
कर्पूर-खदिरोपेतं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीअक्षरपुरुषोत्तमाय-भक्तमंडल सहिताय।
ताम्बूलं समर्पयामि।

राजोपचाराः

छत्रं च चामरं चैव व्यजनं दर्पणं तथा।
पादुकादीनि सर्वाणि गृह्यतां परमेश्वर॥

[**सूचना**—जो साधन हो वहां समर्पयामि बोलना। जो साधन ना हो वहां भावयामि बोलना]

ॐ श्रीस्वामिनारायण-परमात्मने नमः। राजोपचारार्थं–

छत्रं	समर्पयामि	/भावयामि।
चामरयुगलं	,,	,,
दण्डं	,,	,,
आदर्शकं	,,	,,
रत्नखचित पादुकां	,,	,,
वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभि-प्रभृति-वाद्यानि	,,	,,
नृत्यगीतं-वादित्रादिकं	,,	,,

[**सूचना**—तत्पश्चात् निम्नलिखित भजन की पंक्तियाँ बोलिए।]

'निमित्त सेवा का बनूँ मैं, तूने गरज ग्रहण की;
संबंध प्रभु से हो मेरा, तेरा यत्न बस यही;
फिर भी ये मन, क्यों मान नहीं पाए;
पकड़ ना रखे, अनुभव जो तूने करवाए।
मन इत-उत डोले, भरमाऽऽए.....
वृत्तियों में झूले, दुःख पाए; एक पल भी जो तुझ में लागे तो,
सुख धाम का ये पा जाए....
मन इत-उत डोले, भरमाऽऽए....'

या

'ये कृपा आपकी जो मुझको है स्वीकार किया–2
ना गिने दोष-गुण तू ने तो सिर्फ प्यार दिया–2
हुआ धन्य मैं, सोचता ये रहूँ,
हुआ क्या मुझे, क्या किसी से कहूँ;
आपके ही रूप में प्रभु हैं मिले;
हृदय में रहते हैं अखंड मेरे;
कभी ना भूलं मैं ये सत्य ऐसा करवा दो
वो पहली बार का आनंद मुझे लौटा दो...'

आरार्तिक्यं–नीराजनम्—

नीराजनं गृहाणेश पञ्चवर्ति-समन्वितम्।
तेजोराशि-र्मयादत्तो लोकानन्द-करप्रभो॥
ॐ श्रीअक्षरपुरुषोत्तमाय भक्तमंडल-सहिताय

आरार्तिक्यं समर्पयामि।

[**सूचना—** गंध, पुष्प, अक्षत द्वारा आरती का पूजन कीजिए। इसके बाद आरती कीजिए]

जय सद्‌गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,
सहजानंद दयालु ...(2), जय अक्षरधामी.....
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

चरणसरोज तुम्हारे, वंदूँ कर जोरी, प्रभु वंदूँ कर जोरी...
चरन में शीश धरन से...(2), मिटती दुःख-होरी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

नारायण नरभ्राता, द्विजकुल तनधारी, प्रभु द्विजकुल तनधारी...
पामर पतित उबारे...(2), अगणित नर-नारी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

नित्य नित्य नौतम लीला, करते अविनाशी, प्रभु प्यारे अविनाशी...
अड़सठ तीरथ चरन में...(2), कोटि गया काशी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

पुरुषोत्तम प्रगट के, दर्शन जो भी करे, प्रभु दर्शन जो भी करे...
काल-करम से छूटे ...(2), कुटुंब सहित वो तरे.....
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

करुणानिधि ये तेरी करुणा रंग लाई, प्रभु करुणा रंग लाई....
मुक्तानंद न संशय ...(2), मुक्ति सुगम पाई .....
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

जय सद्‌गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,
सहजानंद दयालु ...(2), जय अक्षरधामी.....
जय जय सद्‌गुरु स्वामी.... जय जय.......

[**सूचना**—आरती के बाद निम्नलिखित धून बोलिए]

घनश्याम महाराज **जय जय घनश्याम महाराज–3**
हरिकृष्ण महाराज **जय जय हरिकृष्ण महाराज–3**
सहजानंद महाराज **जय जय सहजानंद महाराज–3**
अक्षर पुरूषोत्तम महाराज
जय जय अक्षर पुरूषोत्तम महाराज–3
शास्त्रीजी महाराज **जय जय शास्त्रीजी महाराज–3**
योगीजी महाराज **जय जय योगीजी महाराज–3**
काकाजी महाराज **जय जय काकाजी महाराज–3**
पप्पाजी महाराज **जय जय पप्पाजी महाराज–3**
हरिप्रसाद महाराज **जय जय हरिप्रसाद महाराज–3**
अक्षरविहारी महाराज **जय जय अक्षरविहारी महाराज–3**
साहेबजी महाराज **जय जय साहेबजी महाराज–3**

मन्त्रपुष्पांजलिः

[**सूचना—**महापूजा में बैठे हुए सभी मुक्तों के हाथ में पुष्प दीजिए। बाद में बोलिए।]

सेवन्तिका-बकुल-चम्पक-पाटलाब्जैः
पुन्नागजाति-करवीर - रसाल-पुष्पैः।

कुन्द प्रवाल - तुलसीदल मालतीभिस्
त्वां पूजयामि जगदीश्वर लोकनाथ॥
ॐ
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा, स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने ।
नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम्।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥
ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं, भौज्यं, स्वाराज्यं,
वैराज्यं, पारमेष्ठ्यं, राज्यं, महाराज्यम्
आधिपत्यमयं, समन्त पर्यायी, स्यात्
सार्वभौमः, सार्वायुषः आन्तादापरार्धात्।
पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एकराडिति॥
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो, मरुतः
परिवेष्टारो, मरुत्तस्यावसन्गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति॥
हरिः ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो,
विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।

सं बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रै
द्यावा, भूमी जनयन्देव एकः॥
ॐ सहजानन्दाय विद्महे। साक्षराय च धीमहि।
तन्नः स्वामी प्रचोदयात्।
ॐ घनश्यामाय विद्महे। नीलकण्ठाय धीमहि।
तन्नो हरिः प्रचोदयात्।
ॐ नारायणाय विद्महे। वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
ॐ श्रीअक्षरपुरुषोत्तमाय-भक्तमंडल-सहिताय इमं मन्त्रपुष्पांजलिं सर्मपयामि।

[**सूचना**—ठाकुरजी को पुष्प अर्पण करें।]

नामरटनम्

[**सूचना**—महाराज स्वामी,प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी और सभी गुणातीत स्वरूपों की इच्छा से इन्हीं की ही प्रसन्नता के लिए महापूजा में अब धुन की जाती है। शाश्वत तथा प्रासंगिक संकल्प कर धून करें।]

यह महापूजा साक्षात् अक्षरधाम की हो रही है। जिसमें भगवान स्वामिनारायण, अक्षरब्रह्म और समग्र मुक्तगण, दिव्य स्वरूप में उपस्थित रह भक्तों की प्रार्थना सुनते हैं और वे शुभ एवं सत्य संकल्प अवश्य सिद्ध करेंगे।

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी और प्रगट गुणातीत स्वरूपों की केवल दया, करुणा और कृपा दृष्टि से ही यह होता है। इसकी

एक ही शर्त है और वह है '**निर्दोष बुद्धि**'। इसलिए ऐसे निर्दोष बुद्धि वाले जो-जो भक्त, बहनें सच्चे भाव से महापूजा करें और करवाएं, उनकी सब शुभकामनाएँ पूर्ण हों—ऐसी साक्षात् प्रगट भगवान को इस महापूजा में प्रार्थना है।

1. प्रत्यक्ष धाम, धामी और मुक्तों के लिए ही जीवन जीने वाले सभी मुक्त सुखचैन से भगवान का भजन करें और उनकी व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक समस्याएँ हल हो जायें—ऐसी अंतर की प्रार्थना है !
2. '**सेवा- स्मृति और सुहृद्भाव**'- यह गुरुमंत्र आसानी से सिद्ध हो जाए और प्रगट के संबंध वाले धूला भगत जैसे अल्पमति वाले हरि भक्तों के प्रति भी अत्यंत दिव्यभाव अखंड रहे—ऐसी अंतर की प्रार्थना है।
3. प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई और प.पू. भरतभाई जैसे भगवत्स्वरुप संतों के पास केवल सरलता रहे और उनके अभिप्राय एवं अनुवृत्ति के अनुसार हम निर्मानी होकर अखंड रह सकें—ऐसी अंतर की संवेदना है।
4. यहां सम्पर्क में आते हर एक की व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक समस्या हल होती रहे और उन्हें प्रगट की निष्ठा हो जाए एवं भजन के बल से सब के दुःखमात्र दूर होकर सब तन-मन-धन व आत्मा से सुखी हों—ऐसी अंतर की प्रार्थना !

5. प.पू. काक ाजी के आशिष है कि ‘सारे संप्रदाय में दिल्ली का यह केन्द्र अनोखा बनेगा.....’ उनकी यह आशिष झेलने हम काबिल बनें और उनके अभिप्राय की इस भक्ति में जुट जाएं–ऐसा–बल-बुद्धि हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरुपों दें–ऐसी याचना है।
6. मंदिर के सभी संत व युवक एवं ‘अक्षरज्योति’ की सभी बहनें संप, सुहृद्‌भाव और एकता के गुरुमंत्र से भगवान की मूर्ति सिद्ध करके **अपने-अपने स्वधर्म में रहते हुए** संपर्क में आते सभी को भगवान की मूर्ति बांटने का एकमात्र उद्यम करें और प.पू. काकाजी का परिचय बनें–यही प्रार्थना है।
7. देश पर मंडराए मौजूदा आतंक के माहौल में भगवान और संत के आश्रित मुक्तों की हर प्रकार से रक्षा होती रहे।
8. बृहद्‌ गुणातीत समाज के शिरछत्र और धरती के मंगल ऐसे हमारे प.पू. स्वामिजी का स्वास्थ्य निरामय रहे....
9. प.पू. गुरूजी और पू. दीदी का स्वास्थ्य हमेशा निरोगी रहे–यही अंतर की आरजू है।
10. सत्संग में हर जगह से सुहृदभाव के पूर उमड़ते रहें और सारा बृहद्‌ गुणातीत समाज भावात्मक एकता से एकाकार रहता हुआ प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी की चिरंजीव स्मृति बना रहे–परिचय देता रहे। इस हेतु अब धुन की जाती है।

[**सूचना**—अब बीस मिनिट तक धून कीजिए।]

प्रार्थनापूर्वक नमस्कार

[**सूचना**—धून करने के बाद दो हाथ जोड़ कर एकचित से प्रार्थना करते हुए निम्नलिखित भजन की पंक्तियाँ बोलिए।]

'दिव्य तू और तेरे सभी, मानूँ मैं यही सदा,
तेरी और तेरे भक्तों की, गाऊँ मैं महिमा,
भक्तों का बनूँ दास मैं–2, ज्यों हूँ दास आपका
करता है अक्षर मुक्त 2
स्वर्गों से शानदार है ताड़देव आपका............'

या

कोटि साधन से दुर्लभ जो,
प्रभु का संबंध हमें मौज मिला–2
सत्संग से जुड़ कर सहज मिला
जितना अब समर्पण कर दोगे,
उतना ही सुख पा जाओगे
सत्संग से भागे फिरते हो,
भगवान को तुम क्या पाओगे...

या

दो हाथ जोड़ प्रभु प्रगट को,
आज्ञा में रहे वही सत्संग है–2
आज्ञा में रहे वही सत्संग है
ऐसे सत्संग से प्रभु वश होंगे,
साधन से नहीं कर पाओगे

सत्संग से भागे फिरते हो,
भगवान को तुम क्या पाओगे
साधु से संबंध................

या

'साधु, सेवक, बहनें, गृहस्थ पाँच ऐसे हों
काकाजी की रीत से जो **जीवन जीतें हों-2**
होSS, पहचाने अभिप्राय अब हम तेरा
बन जाए यही जीवन सूत्र अब मेरा हो
जीवन सूत्र अब मेरा
हे गुरुवर हे.................
ऐसे भक्तों में लग जाये अपना भी नंबर
मन का करें अमन
हम अपने मन का करें अमन..........'

क्षमापनम्

[**सूचना**—हाथ जोड़ कर भगवान के पास क्षमा मांगें।]

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥ 1॥
यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥ 2॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष त्वं पुरुषोत्तम॥ 3॥

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मे मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥ 4॥

संकल्पः

[**सूचना**—इसके बाद सन्तों और हरि भक्तों के हाथ में जल देकर निम्नलिखित संकल्प कीजिए।]

ॐ अद्यात्र मासोत्तमे मासे....... मासे .... वासरे..... दिनांके सर्वेषां भक्तानां धर्मार्थ काम मोक्ष-अभिलाष-सिद्धयर्थं, शरीरे-गृहे-वा दोष-रोग-क्लेश-भय-उच्चाट-व्याध्यादि-विनाशार्थं-दशविधि लक्ष्मी शुभफल प्रात्यर्थं एतद्देहे एकान्तिक-धर्म-सिद्धयर्थं च श्रीप्रगट-अक्षरपुरुषोत्तम-स्वमुक्तैः सह पूजाविधेः यन्-न्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं भवतां एकान्तिक-सन्तवचनात्, सर्वं परिपूर्णम् अस्तु। अस्तु परिपूर्णम्॥

अर्पणम्

[**सूचना**—पूजा करने वाले निम्नलिखित संकल्प करके दायें हांथ में जल लेकर अर्पण करे।]

**कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥
निजाश्रितानां सकलार्तिहंता सद्धर्मभक्ते रवनंविधाता।
दाता-सुखानां मनसेप्सितानां तनोतु कृष्णोऽखिलं मंगलं नः॥**

अनेन आवाहन-आसन-पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नान-वस्त्र- उपवीत-गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा-

नमस्कार- प्रदक्षिणा-मन्त्रपुष्परूपैः षोडशोपचारैः, अन्योपचारैः च यथाज्ञानेन यथा मिलितोपचार-द्रव्यैः कृतपूजनेन श्री प्रकट स्वामिनारायणः, प्रीयन्तां, न मम।

आशीर्वादः

[**सूचना**—बायें हाथ में चावल लेकर बोलिए।]

ॐ श्री वर्चस्वम्- आयुष्यम् -आरोग्यम् -अविद्याच्छोभमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं द्विसंतानलाभं, शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥

एकान्तिका मुक्तवृन्दाः प्रत्यक्ष परमात्मनः।
प्रयच्छन्तु शुद्धभावेन मंगलानि श्रियस्तथा॥

[**सूचना**—इस प्रकार बोल कर संतों, हरि भक्तों के ऊपर आशीर्वाद रूप चावल बिखेरे।]

विसर्जनम्

महाराज—स्वामी, पू. शास्त्रीजी महाराज, पू. योगीजी महाराज, गुरुहरि पू. काकाजी, पू. पप्पाजी, पू. हरिप्रसाद-स्वामिजी व सभी गुणातीत स्वरुपों—जो अपने एकान्तिक भक्तों एवं मुक्तमंडल सहित इस महापूजा में पधारे हैं, इन सबको हमारे हृदयाकाश में सदैव स्थित रहने की प्रार्थना है और महापूजा में की गई या हो गई गलती के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं व कल फिर से महापूजा में शीघ्र पधारने की विनती करके अब आपको विसर्जित करते हैं।

[**सूचना**— इस प्रकार बोल करके निम्नलिखित श्लोक बोलिए।]

स्वस्थानं गच्छ हे स्वामिन! स्थानं ते हृदयं मम।
इष्टकाम-प्रसिद्ध्यर्थं प्रत्यक्षो भव सर्वदा॥

[**सूचनाः**—इस प्रकार श्लोक पाठ करके घंटानाद कीजिए।]

चरणामृतमन्त्रः

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि-विनाशनम्।
हरेः पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

[**सूचना**—इस प्रकार श्लोक पाठ करके आचमनी में जल लेकर चारों दिशाओं में बिखेर दीजिए।]

सर्वमांगल्यमन्त्रौ

[**सूचना**—अंत में सब का मांगल्य हो, ऐसी भावना हृदय में करते हुए निम्न दो श्लोक बोलिए।]

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःख-माप्नुयात्॥
साक्षादक्षर दिव्यधाम स्वरूपं सत्यं परं धीमहि।
ध्यानाद्यस्य भवन्ति तद्रूपजनाः शीघ्रं प्रसादात् हरेः॥
यो भूमौ भ्रमतः करोत्यविरतं प्रेम्णा हरेर्वैकथां।
स श्री 'ज्ञानजी योगीराज' सुभगः कुर्यात् सदा मंगलम्॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर
'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,
अशोकविहार - III, दिल्ली - 110 052 (भारत)
दूरभाष : 4709 1280, 4709 1281
ई-मेईल : taaddev@ydsd.org